०२ अगस्त २०१५

अपने गुरु की परम्परा का महोत्सव मनाना

सिद्धयोग ध्यान शिक्षक का एक पत्र

प्रिय सिद्धयोगी,

इस अगस्त माह में, सार्वभौमिक सिद्धयोग संघम् दो पवित्र कार्यक्रमों पर मनन करता है व उनका स्मरणोत्सव मनाता है। ८ अगस्त को हम *भगवान नित्यानन्द,* की पुण्यतिथि का सम्मान करेंगे, १९६१ का वह वार्षिक दिवस जब वे अपनी भौतिक देह का परित्याग कर परम तत्व में विलीन हो गए थे। और १५ अगस्त को हम *बाबा-मुक्तानन्द* का दिव्य दीक्षा दिवस मनाएँगे, १९४७ का वह दिन, जब उन्होंने अपने गुरु भगवान नित्यानन्द से आध्यात्मिक दीक्षा ग्रहण की थी।

ये महोत्सव, हमारी गुरु, गुरुमाई चिद्विलासानन्द द्वारा २०१५ के लिए दिए गए सन्देश के, अध्ययन और अभ्यास को और गहन करने हेतु हमारे लिए विशेष अवसर हैं :

मुड़ो
अन्तर की ओर
करो सहजता से
ध्यान

एक छोटे से सुन्दर गाँव गणेशपुरी में जिस दिन बाबा मुक्तानन्द ने उनके गुरु से *शक्तिपात दीक्षा* ग्रहण की, ठीक उसी दिन भारतवर्ष अंग्रेजी साम्राज्य से मुक्त हुआ था। और १५ अगस्त १९४७, बाबा जी के लिए भी स्वतन्त्रता- आध्यात्मिक मुक्ति-का वचन लेकर आया।

यद्यपि बाबा जी ने जीवन में अधिकांश समय योग का अध्ययन एवं अभ्यास किया था और इसकी सभी शाखाओं में निपुण हो गए थे, किन्तु जैसा कि उन्होंने कई बार कहा है, उनकी वास्तविक आध्यात्मिक यात्रा उस दिन आरम्भ हुई जब उन्हें शक्तिपात दीक्षा प्राप्त हुई- वह दीक्षा जो मनुष्य के अन्दर की आन्तरिक दिव्य शक्ति को जाग्रत कर देती है। दो दशकों से भी अधिक समय तक बाबा जी सम्पूर्ण भारत में *सद्गुरु* की खोज में भ्रमण करते रहे- एक सच्चे गुरु जो उन्हें अन्तर- निहित ईश्वर का ज्ञान प्रदान कर सकें। और वे सद्गुरु थे भगवान नित्यानन्द, एक जन्मसिद्ध। अपनी आध्यात्मिक आत्मकथा- *चित्शक्ति विलास* में बाबा मुक्तानन्द ने शक्तिपात ग्रहण करने के अपने अनुभव का बहुत

ही हृदयस्पर्शी
वर्णन किया है। यह एक उद्धरण है :

उनकी आँखों के मध्यबिन्दु से ज्योति-किरण मेरे अन्दर प्रवेश कर रही थी। वह किरण उष्ण तेजयुक्त दहकते ताप की तरह मुझे स्पर्श कर रही थी। उसका प्रकाश किसी बड़े 'बल्ब' के प्रकाश की तरह आँखे चकाचौंध कर देने वाला था। जब भगवान नित्यानन्द के चक्षु के मध्यबिन्दु से ज्योति-किरण बाहर प्रसरित हो कर मेरी आँखों में प्रविष्ट हो रही थी तब मैं आश्चर्य, विस्मय, आनन्द और भय से रोमांचित हो उठा। उस किरण के रंग को देखता हुआ, भगवान के दिए मन्त्र 'गुरु ॐ' को मैं जप रहा था। किरण अखण्ड थी। उसमें दिव्य चमक थी।
[चित्शक्ति विलास पृष्ठ ६८ संस्करण २०१२]

दिव्य दीक्षा - जिसके माध्यम से ईश्वर, व्यक्ति की अन्तरात्मा के रूप में प्रकट होते हैं - जिसकी प्राप्ति हेतु बाबा जी को युवावस्था से ही गहन ललक थी।

दिव्य दीक्षा ने उनके अन्दर हुए शक्तिशाली आध्यात्मिक उन्मीलन का बीज बो दिया था। बाबा जी ने अपने अडिग अनुशासन, जागरूकता तथा ***साधना*** के प्रत्येक नए दिन के लिए उत्कट प्रत्याशा द्वारा इस बीज को पोषित किया। बाबा जी ने चित्शक्ति विलास में, ध्यान में उन्हें हुए अद्भुत अनुभवों के बारे में, नौ वर्ष के गहन अभ्यास के पश्चात् पूर्ण आध्यात्मिक बोध, एक सिद्ध, पूर्ण तथा आत्मज्ञानी की स्थिति उन्हें कैसे प्राप्त हुई, इस विषय में बताया है।
बाबा जी द्वारा वर्णित एक अनुभव इस प्रकार है :

मुझे ऐसा अनुभव होने लगा कि मैं सहस्रार के मध्य में, सर्वाधार नील के मध्य में प्रवेश कर रहा हूँ। उसके अन्दर प्रवेश करते ही फिर से एक बार सर्वव्यापक विश्व मुझे दिखायी दिया। मैंने सर्वत्र देखा। जितने नर-नारी, छोटे-बड़े, ऊँच-नीच देखे उन सभी में ऐसी एक-एक नीलमणि देखी। जो नीलमणि मैंने अपने में देखी वही सभी में दिखायी दी। सभी के सहस्रार में यही अन्तरात्मा है....
[चित्शक्ति विलास पृष्ठ १९४ संस्करण २०१२]

ध्यान के अपने दृढ़ अभ्यास द्वारा बाबा जी परमोच्च स्थिति में स्थायी रूप से स्थापित हो चुके थे। वे अपनी *दिव्य दीक्षा* का महोत्सव मनाते थे क्योंकि वे जानते थे कि *शक्तिपात* ही वह बीज था जो उच्चतम बोध के रूप में विकसित होता हुआ था।

बाबा जी को मोक्ष की स्थिति प्राप्त होने के पाँच वर्ष बाद, भगवान नित्यानन्द ने *महासमाधि* ली- वे अपनी भौतिक देह का त्याग कर परम तत्व में विलीन हो गए। उसी समय उनकी सिद्धावस्था के असीम पुण्य उनके शिष्यों के हृदयों में बहुत गहन एवं अलौकिक रूप से प्रवेश कर गए। *पुण्यतिथि* का अर्थ है किसी महान आत्मा के समाधि लेने की वार्षिक तिथि। किसी संत की पुण्यतिथि मनाना, अपने आप में महापुण्यकारक है। इसलिए जब-जब हम पुण्यतिथि मनाते हैं, हम भगवान नित्यानन्द के जीवन का सम्मान करते हैं, उनके सदैव विद्यमान प्रेम एवं सुरक्षा को अनुभव करते हैं और मानवता के प्रति

उनके प्रेम का गुणगान करते हैं। उन्होंने बाबा जी को केवल दीक्षा ही नहीं दी अपितु बाबा जी को गुरु भी बना दिया।

भगवान नित्यानन्द ने देह-त्याग से कुछ पूर्व बाबा जी को अपने समीप बुलाया और गुरु-पद की सम्पूर्ण शक्ति, ज्ञान तथा अधिकार बाबा जी को हस्तान्तरित किए। बाबा जी सिद्धयोग पथ के गुरु बने और विश्व के लिए शक्तिपात दीक्षा का उपहार लेकर आए। दो दशकों के बाद बाबा मुक्तानन्द ने गुरुमाई चिद्विलासानन्द को सिद्धयोग पथ का गुरु बनाया। और अब ३३ वर्षों से गुरुमाई , शक्तिपात तथा अपनी सिखावनियों के उपहार से विश्व को आशीर्वाद प्रदान कर रही हैं।

मुझे विस्मय है कि हम इस अमूल्य उपहार, इस अनूठे सौभाग्य को अनुभव करते हैं, अपने जीवन में सदेह *सद्गुरु* का होना- और वो भी श्री गुरुमाई जैसी असाधारण गुरु, जो निरन्तर हमें सिखावनियाँ प्रदान करती हैं और हमारे अभ्यास को आगे बढ़ाने हेतु बड़े प्रेम से कई तरीके हमें सिखाती हैं। इस वर्ष श्री गुरुमाई ने २०१५ के लिए अपना सन्देश दिया है :

मुड़ो
अन्तर की ओर
करो सहजता से
ध्यान

हमें ध्यान पर श्री गुरुमाई की सिखावनी और ध्यान के अभ्यास के मार्गदर्शन हेतु उनकी कृपा प्राप्त हुई है, और यह सब केवल हमें अपने अन्तर-निहित ईश्वर को अनुभव करने के उद्देश्य से।

इस अगस्त माह में हम सिद्धयोग गुरुओं की पवित्र परम्परा का सम्मान करेंगे एवं महोत्सव मनाएँगे। उनमें हम प्राचीन शास्त्र- *कुलार्णव तन्त्र* के सत्य को देख सकते हैं, जो कहता है कि भगवान शिव के अनुसार, बिना दीक्षा के मुक्ति नहीं हो सकती, बिना गुरु के दीक्षा नहीं हो सकती और परम्परा के बिना गुरु नहीं हो सकते। प्रतिदिन हम भगवान नित्यानन्द, बाबा मुक्तानन्द और गुरुमाई चिद्विलासानन्द के स्वरूपों के माध्यम से आदि गुरु की दिव्य शक्ति का अनुभव कर सकते हैं।

उनके मार्गदर्शन में हम ध्यान के अभ्यास का आनन्द लेते रहें।

सादर,

ईश्वरी ऐल्सा क्रॉस

सिद्धयोग ध्यान शिक्षक